HINDI (HONS)-6th SEMESTER

Topics- प्रेक्षागृह/ Class-1/ Hindi Method

- **प्रेक्षागृह किसे कहते हैं?**

➢ वह स्थान जहाँ नाटक खेला जाए और दर्शक बैठ कर देखें- प्रेक्षागृह कहलाता है। प्रेक्षागृह को नाट्यशाला एवं थिएटर भी कहा जाता है। प्राचीन काल में राजमहल का वह कमरा जहाँ राजा मंत्रियों से मंत्रणा करते थे। प्रेक्षागृह कहलाता था।

- **प्रेक्षागृह की रूपरेखा को स्पष्ट कीजिए?**

➢ भरतमुनि ने अपने 'नाट्यशास्त्र' में तीन प्रकार के प्रेक्षागृह का विधान किया है- 1. लंबा आयताकार 2. वर्गाकार 3. त्रिकोना। ये तीनों भी परिमाण के अनुसार तीन प्रकार के होते हैं- ज्येष्ठ, मध्यम और कनिष्ठ। इनमें से ज्येष्ठ 108 हाथ लंबा होता है, मध्यम 64 हाथ लंबा होता है और कनिष्ठ 32 हाथ लंबा होता है। इसमें से ज्येष्ठ देवताओं का, मध्यम राजाओं का और कनिष्ठ या छोटा साधारण लोगों का होता है। भरतमुनि ने इन तीनों प्रकार के प्रेक्षागृह में मध्यम को ही प्रशस्त माना है, क्योंकि उसमें पाठ्य और गेय सब कुछ अत्यंत सुविधा के साथ स्पष्ट सुनाई पड़ता है। हाथ की नाक का क्रम यह है- 8 अणु का रज, 8 रज का बल, 8 बल का लिक्षा, 8 लिक्षा का यूक, 8 यूक यव, 8 यव का अंगुल, 24 अंगुल का हाथ (लगभग डेढ़ फूट), और चार हाथ का दंड होता है।

HINDI (HONS)-6th SEMESTER

Topics- आत्मकथा/ Class-2/ Hindi Method

- **आत्मकथा किसे कहते हैं?**

➢ आत्मकथा किसी लेखक द्वारा अपने ही जीवन का वर्णन करने वाली कथा को कहते हैं। यह संस्मरण से मिलती-जुलती लेकिन भिन्न विधा है। जहाँ संस्मरण में लेखक अपने आसपास के समाज, परिस्थितियों व अन्य घटनाओं के बारे में लिखता है वहीं आत्मकथा में केंद्र लेखक स्वयं होता है।

- **आत्मकथा पर एक टीका लिखें?**

➢ आत्मकथा हमेशा व्यक्ति परख होती है, यानी वह लेखक के दृष्टिकोण से लिखी जाती है। इसमें लेखक अनजाने में या जानबूझकर अपने जीवन के महत्वपूर्ण तथ्य छुपा सकता है। या फिर कुछ मात्रा में असत्य वर्णन भी कर सकता है। एक और आत्मकथा से व्यक्ति के जीवन और परिस्थितियों के बारे में पढ़कर पाठकों को जानकारी एवं मनोरंजन मिलता है, तो दूसरी और इतिहासकार आत्माओं की जानकारी को स्वयं में मान्य नहीं ठहराते और सदैव अन्य स्रोतों से उनमें कही गई बातों की पुष्टि करने का प्रयास करते हैं।

आत्मकथा सहानुभूति का सबसे सरल माध्यम है। आत्मकथा के द्वारा लेखक अपने जीवन, परिवेश, महत्वपूर्ण घटनाओं, विचारधारा, निजी अनुभव, अपनी क्षमताओं और दुर्बलताओं तथा अनेक समय की सामाजिक-राजनीतिक स्थितियों को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करता है।

HINDI (HONS)-6th SEMESTER

Topics- आत्मकथा/ Class-3/ Hindi Method

- **हिंदी के प्रमुख आत्मकथाओं का इतिहास:-**

➢ हिंदी में आत्मकथा लेखन की परंपरा बहुत पुरानी है। हिंदी साहित्य में आत्मकथाओं की एक लंबी परंपरा रही है। हिंदी की प्रथम आत्मकथा बनारसी दास जैन कृत 'अर्द्धकथा' (1641) है। इसके बाद भारतेंदु हरिश्चंद्र ने स्वयं की आत्मकथा 'एक कहानी कुछ आपबीती कुछ जगबीती' का आरंभिक अंश 'प्रथम लेख' शीर्षक से प्रकाशित किया था। इसके बाद सत्यानंद अग्निहोत्री कृत 'मुझ में देव जीवन का विकास' का नाम आता है। इसके बाद भाई परमानंद की आत्मकथा 'आपबीती' प्रकाशित हुई। स्वतंत्रता के बाद आत्मकथा लेखन का धीरे-धीरे विकास होता गया। कुछ आत्मकथाओं को इस प्रकार देख सकते हैं- वियोगी हरी- मेरा जीवन प्रवाह, यशपाल- सिंहावलोकन, हरिवंश राय बच्चन- क्या भूलूं क्या याद करूं, नीड़ का निर्माण फिर, बसेरे से दूर, भीष्म साहनी- आज के अतीत, ओमप्रकाश बाल्मीकि- जूठन, मोहनदास नैमिशराय- अपने-अपने पिंजरे प्रमुख हैं।

HINDI (HONS)-6th SEMESTER

Topics- अक्करमाशी/ Class-4/ Hindi Method

- समाज की निगाह में अमान्य संबंधों से जन्मी संतान कोमराठी में

अक्करमाशी कहते हैं। अर्थात 'अक्करमाशी' का अर्थ है- नाजायज औलाद। शरण कुमार लिंबाले की आत्मकथा 'अक्कर माशी' दलित लेखकों द्वारा लिखी गई आत्मकथाओं में अपना अलग स्थान रखती है। असामाजिक, अनैतिक संबंधों से उत्पन्न अवैध संतति की, सवर्ण पिता और अछूत माता की इस व्यथा-कथा का सशक्त अनुवाद डॉ॰ सूर्यनारायण रणसुभे ने किया है।

शरणकुमार लिंबाले: शरणकुमार लिंबाले एक मराठी भाषा के लेखक, कवि और साहित्यिक आलोचक हैं। उन्होंने 40 से अधिक पुस्तकों को लिखा है। उनकी कुछ प्रमुख रचनाएं हैं- आत्मकथा- अक्करमाशी, कहानी संग्रह- देवता आदमी, मेरा परिवार, हरिजन मास्टर, त्रिमुख, नाग पीछा कर रहे हैं, नशे में छुआछूत, हम नहीं जाएंगे।